आर.एन.आई.नं. RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी. सं. RJ/UD/29-128/2015-2017

मन के जीते जीत सदा

अंक-225 | तारीख- 21 जुलाई, 2015, द्वितीय आषाढ़ शुक्ल- 05 मंगलवार | उदयपुर | कुल पृष्ठ-2 | मुल्य -1 रूपया

बंदरों ने पेड़ हिलाया तो अचानक बरसने लगे नोट

कठूमर–राजस्थान। अलवर के कठूमर में लोग एक हिलते पेड़ को देख तब लोग अचंभे में रह गए, जब इस पेड़ से 500–500 के नोट बरसने लगे। पेड़ पर बड़ी संख्या में बंदर बैठे थे और ये ही पेड़ को हिला रहे थे। कुछ लोग तो इसे चमत्कार मान रहे थे, लेकिन जब इसकी तह में गए तो मामला कुछ और ही निकला।

असल में एक दिन पहले यहां तहसील में अर्जीनवीस विजयपाल जैन के पास कोई व्यक्ति अपने प्लॉट की रजिस्ट्री कराने के लिए एक लाख रूपए के रूप में 50–50 हजार रूपए की दो नोटों की गड्डी देकर गया। उसने दोनो गड्डियों को एक थैले में रख दिया। अचानक एक बंदर यहां उछलकूद करता आया और उसमें से एक गड्डी लेकर भाग गया।

दो दिन तक तलाशा लेकिन नहीं मिली गड्डी :– घटना के तुरंत बाद तहसील में काम करने वाले कई कर्मचारियों ने दो दिन तक उसकी तलाश की। आसपास की सभी छतों को खंगाल लिया। देर रात तक, फिर अगले दिन सुबह 4 बजे से तलाश शुरू कर दी गई, लेकिन गड्डी नहीं मिली। यहां तहसील में काफी पेड़ हैं। और बंदरो की इन पेड़ों पर आवाजाही रहती है।

यूं बरसे नोट :– असल में वो बंदर यहां एक पेड़ पर नोट की गड्डी लेकर चला गया था। वो गड्डी दो दिन तक इसी पेड़ पर अटकी रही। जब कई बंदर इस पेड़ पर आए तो उन्होंने उसके पैकेट को खोल दिया, तब ही एक–एक कर नोट पेड़ से नीचे गिरने लगे। इसी को देख लोग हैरान रह गए। फिर क्या था, चंद ही मिनटों में माजरा समझ आया कि दो दिन पहले जो नोट गायब हुए थे, ये उन्हीं नोटों की बरसात है।

अग्रवाल समाज के मेधावी छात्र–छात्राओं व अभिभावकों का सम्मान 9 अगस्त को

उदयपुर। जिले के अग्रवाल समाज के प्रतिभावान, मेधावी छात्र–छात्राओं तथा उनके अभिभावकों का सम्मान समारोह 9 अगस्त को उदयपुर में आयोजित किया जायेगा।

श्री अग्रसेन सहायता कोष ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस सम्मान समारोह में अकादमिक सत्र 2014–15 में सम्पन्न हुई परीक्षाओं के परिणाम में मेरिट अनुसार राजस्थान व केन्द्र के बोर्ड की 10वीं कक्षा से लगाकर आईआईटी, आईएएस, ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट, इंजीनियरिंग, एमबीए, डॉक्टर, सीपीएमटी आदि सभी वर्गों में उत्तीर्ण छात्र–छात्राओं से आवेदन मांगे गये है। सम्मान समारोह के प्रमुख संयोजक डा. आर.के. गर्ग ने बताया कि विस्तृत विवरण एवं आवेदन पत्र सार्वजनिक अग्रवाल धर्मशाला, सेक्टर–11 में उपलब्ध कराये गये है। आवेदन पत्र जमा कराने की अंतिम तिथि 31 जुलाई तय की गई है।

ट्रस्ट सचिव ओम बंसल ने बताया कि अंक तालिका मय आवेदन फार्म उदयपुर में सार्वजनिक अग्रवाल, धर्मशाला सेक्टर–11 , अग्रवाल नमकीन धानमण्डी व होटल रॉयल पाम–उदियापोल अन्दर पर जमा करा सकते है। उदयपुर जिले को सभी तहसीलें, नगरपालिका, कस्बों में स्थित अग्रवाल समाज के छात्र–छात्रा आवेदन फार्म जमा करा सकते है।

कौन-सा ग्रह किस रोग का कारक

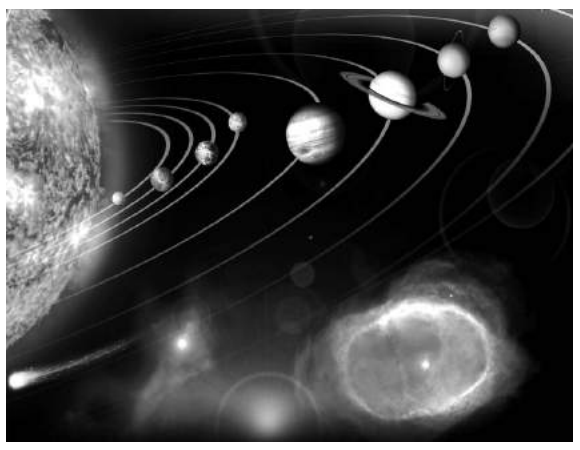

सूर्य :– पित्त, वर्ण, जलन, अंदर, संबंधी रोग, रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी, न्यूरोलॉजी से संबंधी रोग, नेत्र रोग, कुष्ठ रोग, सिर के रोग, ज्वर, मूर्च्छा, रक्तस्राव, मिर्गी आदि।

चन्द्रमा :– हृदय एवं फेफड़े संबंधी रोग, बायें नेत्र में विकार, अनिद्रा, अस्थमा, डायरिया, रक्तल्पता, रक्तविकार, जल की अधिकता या कमी से संबंधित रोग, उल्टी, किडनी संबंधित रोग, मधुमेह, ड्राप्सी, अपेंडिक्स, कफरोग, मूत्रविकार, मुख संबंधी रोग, नासिका संबंधी रोग, पीलिया, मानसिक रोग इत्यादि।

मंगल :– गर्मी के रोग, विषजनित रोग, व्रण, कुष्ठ, खुजली, रक्त संबंधी रोग, गर्दन एवं कण्ठ से संबंधित रोग, रक्तचाप, मूत्र संबंधी रोग, ट्यूमर, कैंसर, पाइल्स, अल्सर, दस्त, दुर्घटना में रक्तस्राव, कटना, फोड़े–फुन्सी, ज्वर, अग्निदाह, चोट इज्यादि।

बुध :–छाती से संबंधित रोग, नसों से संबंधित रोग, नाक से संबंधित रोग, ज्वर, विषमय, खुजली, अस्थिभंग, टायफाइड, पागलपन, लकवा, मिर्गी, अल्सर, अजीर्ण, मुख के रोग, चर्म रोग, हिस्टीरिया, चक्कर आना, निमोनिया, विषम ज्वर, पीलिया, वाणी दोष, कण्ठ रोग, स्नायु रोग इत्यादि।

गुरु :– लीवर, किडनी, तिल्ली आदि से संबंधित रोग, कर्ण संबंधी रोग, मधुमेह, पीलिया, याददाश्त में कमी, जीभ एवं पिण्डलियों से संबंधित रोग, मज्ज दोष, यकृत पीलिया, स्थूलता, दंत रोग, मस्तिष्क विकार इत्यादि।

शुक्र :– दृष्टि संबंधित रोग, जननेन्द्रिय संबंधित रोग, मूत्र संबंधित एवं गुप्त रोग, मिर्गी, अपच, गले के रोग, नपुंसकता, अन्तःस्त्रावी ग्रंथियों से संबंधित रोग, मादक द्रव्यों के सेवन से उत्पन्न रोग, पीलिया रोग इत्यादि।

शनि :– शारीरिक कमजोरी, दर्द, पेट दर्द, घुटनों या पैरों में होने वाला दर्द, दांतों अथवा त्वचा संबंधित रोग, अस्थिभंग, मांसपेशियों से संबंधित रोग, लकवा, बहरापन, खांसी, दमा, अपच, स्नायुविकार इत्यादि।

राहु :– मस्तिष्क संबंधी विकार, यकृत संबंधी विकार, निर्बलता, चेचक, पेट में कीड़े, ऊँचाई से गिरना, पागलपन, तेज दर्द, विषजनित परेशानियां, किसी प्रकार का रियेक्शन, पशुओं या जानवरों से शारीरिक कष्ट, कुष्ठ रोग, कैंसर इत्यादि।

केतु :– वायुजनित बीमारियां, रक्तदोष, चर्म रोग, श्रमशक्ति की कमी, सुस्ती, अकर्मण्यता, शरीर में चोट, घाव, एलर्जी, आकस्मिक रोग या परेशानी, कुत्ते का काटना आदि।

कब होगी रोग मुक्ति :– किसी भी रोग से मुक्ति रोगकारक ग्रह की दशा–अंतर्दशा की समाप्ति के प्श्चात् ही प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त यदि कुंडली में लग्नेश की दशा अन्तर्दशा प्रारम्भ हो जाए, योगकारक ग्रह की दशा–अन्तर्दशा–प्रत्यन्तर्दशा प्रारंभ हो जाए, तो रोग से छुटकारा प्राप्त होने की स्थिति बनती हैं। शनि यदि रोग का कारक बनता हो तो इतनी आसानी से मुक्ति नहीं मिलती है, क्योंकि शनि किसी भी रोग से जातक को लम्बे समय तक पीड़ित रखता है और राहु जब किसी रोग का जनक होता है, तो बहुत समय तक उवस रोग की जांच नहीं हो पाती है। डॉक्टर यह समझ ही नहीं पाता है कि जातक को बीमारी क्या है ? और ऐसे में रोग अपेक्षाकृत अधिक अवधि तक चलता है।

-श्री गिरीराज ज्योति से साभार

पेट की चर्बी घटाने के लिए करें मण्डूकासन

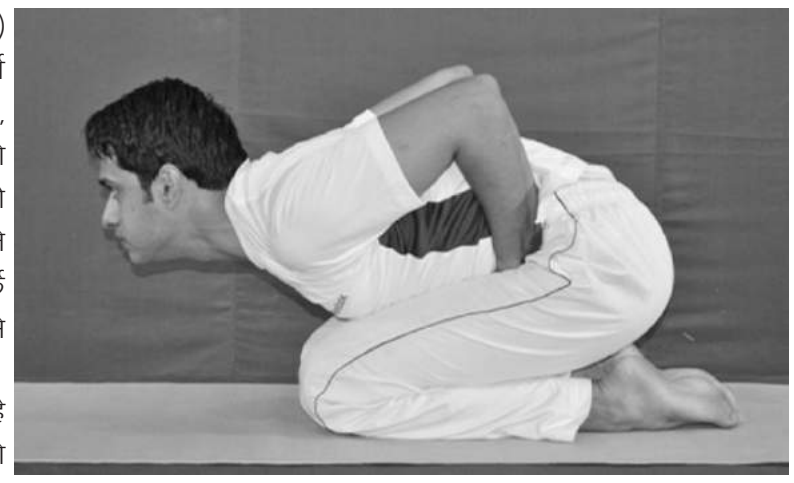

पेट की चर्बी बढ़ना (मोटापा) इन दिनों की आम समस्या है। युवा वर्ग भी इस समस्या से परेशान रहता है। वहीं, पेट की अन्य समस्याएं भी बहुत आम हो चुकी हैं। ऐसा हमारी जीवनशैली की वजह से हो रहा है। लेकिन परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं है। योग का सिर्फ एक आसन आपको इन समस्याओं से छुटकारा दिला सकता है।

मण्डूकासन योग का ऐसा ही आसन है जो मोटापा दूर करता है और पेट को स्वस्थ रखता है। साथ ही साथ, डायबिटीज़ से पीड़ित लोगों के लिए ये आसन बहुत लाभकारी साबित हो सकता है।

विधि :–

- ❖ पहले वज्रासन में बैठ जाएं। इसमें दोनों पैर मोंडकर बैठा जाता है।
- ❖ सबसे पहले अपने दोनों हाथ की मुट्ठियों को बंद करें। मुट्ठियां इस प्रकार बंद हों कि अंगूठा अंदर हो और उंगलियां बाहर।
- ❖ दोनों मुट्ठियों को मिलाते हुए नाभि के ऊपर रख लें। अंगूठा नाभि से स्पर्श कर रहा हो।
- ❖ सांस बाहर निकाल कर आगे झुकें, नज़र सामने हो।
- ❖ कोशिश करें कि छाती घुटनों से लग जाए।
- ❖ सांस अंदर लेते हुए वापस आएं।
- ❖ फिर इस आसन को दोहराएं।
- ❖ इस आसन को खाना खाने के 4–5 घंटे बाद करना चाहिए। और अनुभवी व्यक्ति की देखरेख में ही किया जाना चाहिए।

ईश्वर में विश्वास रखना

नृसिंह भगवान ने जब हिरण्यकशिपु को मारा तब वे बड़े कोप में थे। लक्ष्मीजी भी उन्हें शांत न कर सकीं, ऐसा उग्र रूप था। ब्रह्माजी ने प्रहलाद से कहा : ''बेटा! अब तुम्हीं भगवान के पास जाकर उन्हें शांत करो।''

प्रहलाद ने पास में जाकर भगवान की स्तुति की। प्रहलाद को देखते ही भगवान वात्सल्यभाव से भर गये। माथा सूँघने लगे, स्नेह करने लगे। नृसिंह भगवान कहते हैं : ''प्रहलाद ! मैं तुम पर अत्यंत प्रसन्न हूँ। तुम्हारी जो इच्छा हो, मुझसे माँग लो।''

प्रहलाद क्या बोलता है : ''प्रभु! आपसे कुछ माँगने के लिए मैंने आपको नहीं चाहा था। आपसे कुछ माँगू तो माँगी हुई चीज बड़ी हो गयी, आप छोटे हो गये। उस चीज की महत्ता हो गयी।''

जो गुरु से कुछ माँगता है तो गुरु से स्नेह नहीं करता, अपनी वासना को माँगता है। भगवान से माँगता है तो भगवान को स्नेह नहीं करता अपनी ख्वाहिश का गुलाम है।

प्रहलाद बोलता है : ''प्रभु! आपसे बढ़कर क्या है जो मैं माँगू ? अगर फिर भी आप देना चाहते हो तो इतनी कृपा कर दीजिये कि मेरे हृदय में कभी किसी कामना का बीज अंकुरित ही न हो।'' भगवान ने प्रहलाद को हृदय से लगा लिया।

गहरी नींद में कोई माँग नहीं रहती है तो कितनी शांति रहती है! सुबह उठते हैं, जब तक माँग शुरू हुई तब तक बड़ी शांति रहती है।

सभी माँगों को हटाने के लिए भगवान को पाने की माँग रख दो बस। जब सब माँगें हट जायेंगी तो भगवान की माँग भी हट जायेगी क्योंकि भगवान स्वतः बेपर्दा हो जायेंगे।

जो किसी के भरोसे सुखी होना चाहता है वह इच्छाओं का गुलाम है और जो केवल ईश्वर के भरोसे रहना चाहता है, रामरस में तृप्त रहना चाहता है वह आशाओं का स्वामी है। आशाओं का जो स्वामी हो जाता है, उसका जीवन धन्य हो जाता है।

हरिशचन्द्र की सत्यनिष्ठा

अयोध्या नरेश महाराज हरिशचन्द्र की कथा प्रख्यात है। देवराज इन्द्र की प्रेरणा से महर्षि विश्वामित्र ने उनकी सत्यनिष्ठा की परीक्षा ली। महाराज हरिशचन्द्र की परीक्षा – परीक्षा ने उनकी निष्ठा को अधिक उज्ज्वल ही किया। स्वप्न में महाराज ने ब्राह्मण को राज्यदान किया था। स्वप्न के उस दान को सत्य करने के लिये वे अयोध्याधीश स्त्री तथा पुत्र के साथ राज्य त्यागकर काशी आ गये। ब्राह्मण को दक्षिणा देने के लिये अपनी स्त्री को उन्होंने ब्राह्मण के हाथ बेचा। स्वयं वे बिके चाण्डाल के हाथ। अयोध्या के नरेश चाण्डाल के चाकर होकर श्मशान के चौकीदार बने।

ब्राह्मण के यहाँ कुमार रोहिताश्व को सर्प ने काट लिया। बेचारी महारानी –अब तो वे दासीमात्र थीं । पुत्र के शव को उठाये अकेली श्मशान पहुँचीं। हाय रे दुर्भाग्य– श्मशान का चौकीदार बिना 'कर' लिये शव को जलाने दे नहीं सकता था। कौन चौकीदार–उस मृतक पुत्र का पिता– स्वयं महाराज हरिशचन्द्र। छाती पर पत्थर रखकर कर्तव्य का पालन करना था– स्वामी ने आज्ञा जो दी थी कि 'कर' दिये बिना कोई शव न जलाने पावे।

एक साड़ी – महारानी के पास उस साड़ी को छोड़कर था क्या जो 'कर' दे। वह साड़ी ही आधी फाड़कर 'कर' दे सकती थी। उस पति–परायणा, धर्मशील नारी ने साड़ी फाड़ने के लिये हाथ लगाया। उसी समय आकाश में प्रकाश छा गया। बड़ी गम्भीर ध्वनि सुनायी पड़ी –

अहो दानमहो धैर्यमहो वीर्यमखण्डितम्।

संतो के लक्षण और सत्संग भजन के लिए प्रेरणा

जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी।
ग्यान रंक नर मंद अभागी।।
पुनि सादर बोले मुनि नारद।
सुनहु राम बिग्यान बिसारद ।।२।।

भावार्थ :– जो मनुष्य भ्रम को त्यागकर ऐसे प्रभु को नहीं भजते, वे ज्ञान के कंगाल, दुर्बुद्धि और अभागे हैं।

फिर नारद मुनि आदर सहित बोले–हे विज्ञान–विशारद श्री रामजी! सुनिए–

संतन्ह के लच्छन रघुबीरा।
कहहु नाथ भव भंजन भीरा।।
सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ।
जिन्ह ते मैं उन्ह के बस रहऊँ ।।३ ।।

भावार्थ :– हे रघुवीर ! हे भव–भय (जन्म–मरण के भय) का नाश करने वाले मेरे नाथ! अब कृपा कर संतो के लक्षण कहिए! (श्री रामजी ने कहा–) हे मुनि! सुनो, मैं संतो के गुणों को कहता हूँ, जिनके कारण मैं उनके वश में रहता हूँ ।

षट बिकार जित अनघ अकामा।
अचल अकिंचन सुचि सुखधामा।।
अमित बोध अनीह मितभोगी।
सत्यसार कबि कोबिद जोगी ।।४ ।।

भावार्थ :– वे संत (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर –इन) छह विकारों (दोषों) को जीते हुए, पापरहित, कामनारहित, निश्चल (स्थिरबुद्धि), अकिंचन (सर्वत्यागी), बाहर–भीतर से पवित्र, सुख के धाम, असीम ज्ञानवान, इच्छारहित, मिताहारी, सत्यनिष्ठ, कवि, विद्वान, योगी।

मानव मन के बोल

(आत्मकथा)

जिन खोजा तिन पाईया

मेरी प्रार्थना है इसी क्षण से इस गलती को ठीक कर लें यदि ऑपरेशन हो सकता है तो आप उदयपुर में भेजने की कृपा करें। यहाँ हमारे डॉक्टर साहब मूक–बधिर बच्चे के चेहरे पर भी मुस्कुराहट लाने के लिए उसको कृपया नारायण सेवा संस्थान उदयपुर के स्पेशल स्कूल में भेजें। ये बच्चा मानसिक विमंदित है इसके चेहरे पर खुशी आनी चाहिए। इसको शिक्षण मिलेगा। कितनी अशिक्षा, कितना अज्ञान। ये प्रज्ञा चक्षु बच्चा देख नहीं सकता पर बहुत समझता है। शायद, जो स्थूल आँखों से देखते हैं उनसे अधिक। कौनसे अंधेरे की दीवारें बना ली हमने? कौनसा ये तामस भार आ गया? कौनसा कुएँ के मेंढ़क बन गए? कौनसा अध्यात्म छोड़ दिया हमने? सच्चे अध्यात्म को तो छोड़ ही दिया हमने। तिलक लगाना चाहिए, जनेऊ रखनी चाहिए। भारतीय संस्कृति का पालन करना चाहिए। यज्ञ कीजिए। यज्ञ का अर्थ है त्याग। भेदभाव का त्याग। यज्ञ का अर्थ अपने धन में से गरीब का भी हिस्सा है, आप अकेले इसके मालिक नहीं है, ये केवल आप की मेहनत का पैसा नहीं है, भगवान ने कृपा करके लक्ष्मी जी की कृपा आपके घर पर हुई है, इसका सदुपयोग यदि आप दीन–दुखियों के लिए नहीं करेंगे तो पाप के भागी होंगे। मैं जब कल्याण पढा करता था, सत् कथा अंक, बचपन के सात साल की उम्र में। मैंने पढा कैसे दधीचि ऋषि से इन्द्र ने प्रार्थना की। प्रभू! वृत्रासुर राक्षस, अन्य राक्षस बहुत कष्ट दे रहे है–प्रभू! देवता को कष्ट देने का मतलब अनर्थ होने देना।

क्रमश अगले अंक में.....

सम्पादकीय

फोन की घंटी बजी.....दूसरी ओर से आवाज आयी! भाई सा, जनरल हॉस्पीटल के कम्पाउण्ड में एक अज्ञात व्यक्ति मूर्छित अवस्था में मल–मूत्र से सना पड़ा है। लावारिश एवं अचेतन अवस्था में होने के कारण हॉस्पीटल स्टाफ एवं अन्य कोई भी इस बेसहारा की ओर ध्यान नहीं देता। लगभग एक सप्ताह से यह इसी जगह पड़ा है.....! न कुछ खाया और न ही पिया, पता नहीं किस वजह से अभी तक अपना शरीर नहीं छोड़ पाया है–यह दुःखिया। आप अगर इसे यहाँ से ले जायेंगे तो बड़ा पुण्य होगा..... और इस सूचना के साथ फोन का सम्बन्ध विच्छेद हो गया–दूसरी ओर से। तत्क्षण संस्था साधक श्री नानाभाई अपने एक बन्धु के साथ संस्था वाहन लेकर जनरल हॉस्पीटल पहुँचे! वहां का दृश्य कुछ और ही था। मानव रूप में देव आत्मा से जो सभ्य समाज द्वारा घृणा की जा रही थी, वह पहली बार देखा तो ताज्जुब हुआ कि वाह रे मानव, मानव कहलाने वाले जीव से भी तेरी यह घृणा! 20 फीट दूर से ही मल–मूत्र की बदबू का झौंका राहगिरों को अपनी गिरफ्त में ले लेता। आने जाने वाले मुंह फेर कर नाक दबाएं हुए निकल जाते थे। करत करत अभ्यास के... .....ऐसे दुःखी लोगों के निरन्तर सम्पर्क ने इन साधकों को भीड़ से अलग कर दिया, उसे जाकर अपने हाथों से एक ओर लिटाया और जुट गये उसके शरीर की सफाई में। ऐसा लग रहा था जैसे साक्षात् कृष्ण सुदामा के चरण धो रहे हो। कपड़े तो यहां से पहले से ही गाड़ी में रख लिए थे, तुरन्त नये कपड़े पहनाकर उन्हें उठाकर गाड़ी में लिटाया गया, और चल पड़े सेवाधाम की ओर।

गत दिनों की भूख और प्यास ने उसके शरीर को निचोड़ कर रख दिया था, अशक्तता और कमजोरी की वजह से करवट भी नही बदल पाया था, तभी तो पीठ और घुटनों में पड़ गये थे, गहरे घाव। संस्थान द्वारा अन्न और पानी की कमी को पूरा करने के लिए ग्लूकोज चढ़ा दिया गया, और आवश्यक दवाइयाँ भी की गई प्रारंम्भ। मात्र पांच दिन की सेवा से कुछ बड़बड़ाया। प्रश्न उठा'' कंई नाम है भाया थारो'' होंठ हिले और हल्की सी हरकत जिसने शब्द दिया' उरजन अर्थात् अर्जुन। प्रश्न पुनः गहराया पिता रो नाम? उत्तर मिला भीमा। अन्य प्रश्न कई उभरे, लेकिन होठों के अन्दर ही रह गये सभी प्रश्नों के जवाब। कुछ दिनों की सेवा इन सब प्रश्नों के जवाब अवश्य दे गई। कम दिनों में जो सुधार उसके शरीर में हुआ उससे हमारी उम्मीदें बढ़ी है। सभी साधक यही मानकर इस यज्ञ में दे रहे हैं आहुति कि :–

यहाँ से ईश्वर तो है बहुत दूर, चलो यूं ही करें।
किसी गरीब बेसहारा का सहारा तो बने।।

सिलाई प्रशिक्षण बैच का समापन

'नारायण सेवा संस्थान' के सेक्टर–4 स्थित मानव मन्दिर परिसर में आई.सी.आई.सी.आई. स्वरोजगार उद्यमिता संस्थान व नारायण सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में सिलाई प्रशिक्षण बैच का समापन हुआ। इस अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संस्थापक–चेयरमैन श्री कैलाश मानव का शुभ संदेश सुनाया। संस्थान अध्यक्ष श्री प्रशान्त अग्रवाल द्वारा 23 प्रशिक्षणार्थियों को सिलाई मशीन एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए। संस्थान की परियोजना प्रभारी यशोदा पणिया ने बताया कि उक्त सिलाई प्रशिक्षण 45 दिन तक चला। कार्यक्रम को आई.सी.आई.सी.आई. से मनप्रीत सिंह, प्रशिक्षक रेखा शर्मा ने सम्बोधित किया। नये बैच की तैयारी आरम्भ हो गयी है।

गाय के गोबर को क्यों पवित्र माना जाता है ?

आपने देखा होगा कि किसी भी धार्मिक कार्यों में गाय के गोबर से स्थान को पवित्र किया जाता है। गाय के गोबर से बने उपले से हवन कुण्ड की अग्नि जलाई जाती है। आज भी गांवों में महिलाएं सुबह उठकर गाय के गोबर से घर के मुख्य द्वार को लीपती हैं। माना जाता है कि इससे लक्ष्मी का वास बना रहता है। प्राचीन काल में मिट्टी और गाय का गोबर शरीर पर मलकर साधु संत स्नान भी किया करते थे।

इसके पीछे धार्मिक कारण यह है कि गाय के गोबर में लक्ष्मी का वास माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार गोमूत्र में गंगा मैया का वास है। इसलिए आयुर्वेद में चिकित्सा के लिए गोमूत्र पीने की भी सलाह दी जाती है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी गोबर को चर्म रोग एवं गोमूत्र को कई रोगों में फायदेमंद बताया गया है। गाय का दूध उत्तम आहार माना गया है।

माना जाता है कि मां के दूध के समान गाय का दूध पौष्टिक होता है। इसलिए गाय को माता भी कहा गया है। शास्त्रों में कहा गया है 'गावो विश्वस्य मातरः'। यानी गाय विश्व की माता है। नवग्रहों सूर्य, चंद्रमा, मंगल, राहु, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, केतु के साथ–साथ वरूण, वायु आदि देवताओं को यज्ञ में दी हुई प्रत्येक आहुति गाय के घी से देने की परंपरा है, जिससे सूर्य की किरणों को विशेष ऊर्जा मिलती है। यही विशेष ऊर्जा वर्षा का कारण बनती है, और वर्षा से ही अन्न, पेड़–पौधों आदि को जीवन प्राप्त होता है।

गाय के अंगों में सभी देवताओं का निवास माना जाता है। गाय की छाया भी बेहद शुभप्रद मानी गयी है। गाय के दर्शनमात्र से ही यात्रा की सफलता स्वतः सिद्ध हो जाती है। दूध पिलाती गाय का दर्शन हो जाए तो यह बेहद शुभ माना जाता है।

दूर्वा की उत्पति

–रामनारायण सोमानी

प्रायः हम सभी के घरों और मंदिरों में लघु या वृहद स्तर का पूजन होता ही रहता है उन सभी पूजन कर्मों में दूर्वा (दूब) का प्रयोग भी प्रमुखता से होता है। भारतीय सनातन परम्परा में कई गुप्त तथ्य हैं, जिन्हें हमें जानना चाहिये। जब पूजन का क्रम षोड्शोपचार विधि के अनुसार होता है, उस समय हम दूर्वा से देवता का पूजन करते हैं जिससे देवता प्रसन्न होते हैं और अर्चक के मनोरथ पूर्ण होते हैं। दूर्वा की उत्पत्ति की कथा अत्यंत ही रोचक है,जो निम्न प्रकार से है–

एक बार स्वर्ग श्री हीन हो गया, तब भगवान श्री मन्नारायण की प्रेरणा से देवता और असुरों ने मिलकर क्षीरसागर के मन्थन का उपक्रम किया। मंथनी मंदराचल पर्वत बना, रस्सा बना वासुकी नाग और सभी देव –असुरों ने मन्थन प्रारम्भ किया। उसी क्रिया में एक बार भगवान विष्णु ने अपनी जंघा पर हाथ से पकड़कर मंदराचल पर्वत को धारण किया। मंदराचल के वेग से भ्रमण (घूर्णन) करने के कारण भगवान विष्णु के कुछ रोम उखड़कर समुद्र में गिर पड़े। फिर समुद्र की लहरों द्वारा वे ही रोम उछाले गये, जो बाहर तट पर हरित वण्र के सुन्दर एवं शुभ दूर्वा के रूप में उत्पन्न हुये। उसी दूर्वा पर देवताओं ने मन्थन से उत्पन्न हुये अमृत कलश को रखा, उससे जो अमृत की बूँदें गिरी, उनके स्पर्श से वह दूर्वा अमर हो गयी वह देवताओं के लिये भी पवित्र वन्द्य और पूजनीय हुई।

त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दिता च सुरासुरैः।
सौभाग्यं संतति कृत्वा सर्वकार्य करी भव।।
यथा शाखाप्रशाखाभिर्विस्तृतासि महीतले।
तथा ममापि संतानं देहि त्वमजरामरे।।

हे दूर्व! तुम अमृताजन्मा हो। देवता और असुरों के द्वारा वन्दित हो। हमें सौभाग्य और संतान प्रदान करके सभी कार्यों को करने वाली बनो। हे अजर–अमर! जिस प्रकार से इस धरती पर आप शाखा–प्रशाखाओं के द्वारा फैली हुई हो, ठीक उसी प्रकार से हमें भी संतान (पुत्र–पौत्रादि) को प्रदान करो। इस प्रकार की प्रार्थना द्वारा दूर्वा उपास्य विग्रहों को समर्पित करने से लाभ प्राप्त होता है।

दूर्वा का चिकित्सा क्षेत्र में भी महत्व है। आयुर्वेद के विद्वान अनेकों प्रकार के प्रयोग द्वारा दूर्वा से अनेकों बीमारियों का निदान करते हैं। इसके रस से पेट और मस्तिष्क के रोग ठीक होते हैं। अतः दूर्वा का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इसे साधारण घास समझकर इसकी अपेक्षा नहीं करनी चाहिये। इस संसार में छोटी से छोटी वस्तु का भी समय पर बड़ा महत्व होता है। किसी संत ने कहा है – **छोटा बने सो वो हरि पाये.....!**

मुल्तानी मिट्टी प्रकृति का अनमोल वरदान

मुल्तानी मिट्टी के लिए सबसे अच्छी बात यह होती है कि यह सस्ता होती है और आसानी से पायी जा सकती है। मुल्तानी मिट्टी का इस्तेमाल भी आप बहुत ही सरल और सामान्य तरीके से अपने घर में कर सकते हैं।

त्वचा :- मुल्तानी मिट्टी में जो एन्टीसेप्टिक का गुण होता है वह त्वचा संबंधी समस्याओं से लड़ने में मदद करता है। त्वचा संबंधी चार समस्याओं से लड़ने में मुल्तानी मिट्टी का पैक बहुत मदद करता है –

दाग धब्बों को कम करने में मदद करता है :- कभी–कभी धूप में ज़्यादा देर रहने पर या प्रदूषण के कारण चेहरे पर दाग–धब्बे बन जाते हैं और आपके सौन्दर्य पर दाग लग जाता है। मुल्तानी मिट्टी और दही का पैक इससे राहत दिलाने में बहुत मदद करेगा।

आप धब्बों को असरदार रूप से कम करने के लिए मुल्तानी मिट्टी में चंदन का पाउडर और टमाटर का रस डालकर पैक को बना लें। यह पैक धब्बों को धीरे–धीरे कम करने में बहुत मदद करता है।

मुँहासों से छुटकारा दिलाने में मदद करता है :- प्रदूषण और अपनी त्वचा की देखभाल अच्छी तरह से न करने के कारण चेहरे पर मुँहासे निकलने लगते हैं। मुल्तानी मिट्टी और नीम का पेस्ट मुँहासों का निकलना कम करने में मदद करता है।

झुर्रियों को उम्र से पहले आने से रोकता है :- जैसा ही आप युवा अवस्था से वयस्क अवस्था में कदम रखने लगते हैं आपकी त्वचा अपनी रौनक खोने लगती है। लेकिन मुल्तानी मिट्टी का पैक इस समस्या से जल्द राहत दिलाने में मददगार साबित होता है।

तैलाक्त त्वचा के रौनक को लौटाने में मदद करता है :- मुल्तानी मिट्टी एक ऐसा प्राकृतिक चीज है जो तैलाक्त त्वचा से तेल को सोखने में मदद करता है और त्वचा को ताजगी प्रदान करता है।

बाल :- आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मुल्तानी मिट्टी सिर्फ त्वचा संबंधी समस्याओं से लड़ने में ही मदद नहीं करता है बल्कि बालों के कई समस्याओं से राहत दिलाने में भी मदद करता है। यह स्कैल्प से अतिरिक्त तेल को सोखने में मदद करता है। यह बालों से रूसी की समस्या से राहत दिलाने में और कन्डिशनिंग करने में मदद करता है। रूखे बालों को स्वस्थ करने में मदद करता है–कभी–कभी प्रदूषण या बूरे खान–पान का असर बालों पर होता हैं और वे रूखे और बेजान हो जाते हैं। मुल्तानी मिट्टी, दही और नीबू का पैक बालों को रेशम जैसा बनाने में मदद करते हैं।

दोमुँहे बालों की समस्या से राहत दिलाता है :- अक्सर दोमुँहे बालों की समस्या से महिलाओं को जुझना पड़ता है। इस समस्या के कारण बाल अपने सौन्दर्य को खो देते हैं। मुल्तानी मिट्टी और दही का पैक इस समस्या से राहत दिलाने में बहुत मदद करता है।

तैलाक्त बालों की समस्या से राहत दिलाता है :- जिन लोगों के बाल तैलाक्त होते हैं वे हमेशा चिपचिपे ही नजर आते हैं। कोई भी स्टाइल करना उनके लिए कठीन होता है। मुल्तानी मिट्टी का पैक बालों को काला और घना तो बनाता ही है साथ ही बाल के जड़ों से गंदगी को साफ करने में मदद करता है।

बालों को स्वस्थ रखने में मदद करता है–चेहरे की तरह बालों को स्वस्थ रखना भी ज़रूरी होता है। मुल्तानी मिट्टी का पैक आपके लंबे काले बालों को स्वस्थ और सुंदर बनाये रखने में मदद करता है।

गुरु पूनम का महत्त्व

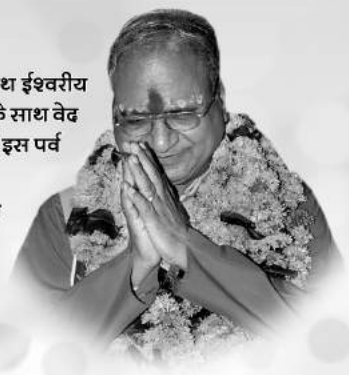

गुरू पूर्णिमा का पावन पर्व हम सबके लिए है। यह पर्व भौतिक सुख शांति के साथ –साथ ईश्वरीय आनंद, शांति और ज्ञान प्रदान करने वाला है। महाभारत, श्रीमद् भागवत एवं ब्रह्मसूत्र आदि ग्रंथों के साथ वेद व्यास जी जैसे ब्रह्मवेताओं का मानव समाज सदैव ऋणी रहेगा क्योंकि इन शास्त्रों एवं विद्धानों ने इस पर्व पर गुरू दर्शनों का महत्त्व बताया।

कहा जाता है... गुरूपुनम पर गुरू का दर्शन करने से शिष्य के वर्षभर के पुण्यकर्मो का फलीभूत हो जाता है। अन्य समय यदि गुरू के द्वार न भी पहुँच पाओ परन्तु गुरूपूनम को तो गुरू के द्वार जरूर पहुंचे और दर्शन लाभ लेकर गुरूपूजन करें। इससे हमारी प्रगति और उन्नति होगी। कोई नहीं जानता कि इस जीवन की शाम कब हो जायेगी? समय रहते हुये हमारे जीवन को अन्धकार से प्रकाश की तरफ ले जाने में गुरू आशीर्वाद अवश्य प्राप्त करें– ''तमसो मा ज्योतिर्गमयः''।

इस उद्देश्य के साथ हम सभी गुरू परिवार के सदस्य आपश्री को आमंत्रित करते हैं कि इस पुनीत पर्व पर गुरूदेव कुलाचार्य श्री कैलाश 'मानव जी' के श्री चरणों में शीश झुकाकर, करबद्ध प्रार्थना करते हुये हम भी उस जीवनदाता को जान लें... समझ लें... इसी में हमारा- अपना कल्याण सुनिश्चित हैं।

–:: निवेदक ::–
प्रशान्त अग्रवाल, कमला देवी, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा, वन्दना अग्रवाल एवं समस्त नारायण सेवा परिवार।

दिनांक एवं समय
31 जुलाई 2015
प्रातः 10.00 बजे से

कार्यक्रमस्थल:–सेवामहातीर्थ, लियोंकागुड़ा, बड़ी, उदयपुर (राज.)

मुद्रक–न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमला देवी, मुद्रण स्थल–13,भोपा मगरी, बीएसएनएल एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3, उदयपुर (राज.) प्रकाशन स्थल–ई–डी–71 बापा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.) सम्पादक–लक्ष्मी लाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 मो.–09928022275,09785039524 www.mannkijeet.com Email:- mankijeet2015@gmail.com